Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college Darbhanga

Agriculture Economics Group B D. III Hons Lecture-23

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व एवं समस्याएँ।

Importance of Agriculture in Indian Economy.

भारत एक कृषि प्रधान देश है भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। देश की जनसंख्या का लगभग 70% लोग अपनी आजीविका के लिए कृषि पर आश्रित है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय आय का लगभग 26% भाग कृषि से प्राप्त होता है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व का सहज रूप से ही पता चल जाता है लेकिन सब से बड़ी बात तो यह है कि भारत में कृषि लोगों के लिए पेशा मात्र ही नहीं है वरन कृषि उनके रहन-सहन विचार धारा, संस्कृति आदि से घुल मिल गयी है। भारतीय वित्त आयोग ने ठीक ही कहा है कि " भारतीय कृषि केवल पेशा मात्र ही नहीं है वरन यह एक जीने का ढंग है जिसने लाखों लोगों के विचार एवं दृष्टिकोण को प्रभावित किया है।" भारतीय अर्थव्यवस्था में निम्नलिखित कारणों से कृषि का अत्यन्त ही महत्व है।

1. जीवन-निर्वाहन का प्रमुख साधन —— भारतीय अर्थव्यवस्था में अधिकांश लोगों के जीवन-निर्वाहन का मुख्य साधन कृषि ही है वर्तमान समय में भारत की कुल जनसंख्या का 12.73 करोड़ काश्तकार है तथा 10.68 करोड़ श्रमिक कृषि कार्य में संलग्न है इसके अतिरिक्त बहुत से लोग अप्रत्यक्ष रूप से भी कृषि द्वारा अपनी जीविका का निर्वहन करते हैं इस प्रकार भारत में कृषि जीवन-निर्वाहन का मुख्य साधन है इस प्रकार भारतीय कृषि 58.4% लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध कराती है।

2. खाद्यान की आपूर्ति का प्रमुख साधन —— भारतीय अर्थव्यवस्था में बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए विभिन्न प्रकार के खाद्यान्न उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी भारतीय कृषि पर है यद्यपि हमें कभी-कभी जनता के भरण पोषण के लिए विदेशों से भी खाद्यान्न का आयात करना पड़ता है फिर भी खाद्यान्न की अधिकांश आपूर्ति देश में उपलब्ध कृषि की उपजों द्वारा ही हो जाती है। वर्तमान समय में हम खाद्यान उत्पादन में आत्मनिर्भर हो रहे हैं।

3. राष्ट्रीय आय का मुख्य स्रोत —— भारतीय कृषि को कृषि के क्षेत्र में राष्ट्रीय आय का योगदान एक मापदण्ड माना जाता है जिससे सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में इस क्षेत्र के महत्व का पता चलता है। कृषि भारतीय राष्ट्रीय आय का एक प्रमुख स्रोत माना जाता है। कृषि उत्पादन में उतार-चढ़ाव आने से राष्ट्रीय आय पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सरकारी आकड़ों के अनुसार देश की सकल राष्ट्रीय आय में कृषि एवं उससे संबंधित क्षेत्र का हिस्सा 26% है जो भारतीय

Scanned by CamScanner

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए कृषि के महत्व को स्पष्ट करता है।

4. औद्योगिक विकास का आधार — भारतीय कृषि देश के औद्योगिक विकास में निम्नलिखित प्रकार से योगदान देती है।

A. कच्चेमाल की आपूर्ति — भारत के अधिकांश उद्योग कृषि से ही कच्चे माल की आपूर्ति करते हैं जैसे जूट, गन्ना, कपास, तेलहन, यदि इन कच्चे पदार्थों की आपूर्ति पर देश के विभिन्न उद्योग निर्भर हैं अगर कच्चा माल नहीं मिले तो उद्योग बंद हो जाएंगे और भारत औद्योगिक विकास नहीं होगा इस प्रकार भारतीय कृषि औद्योगिक विकास का आधार है।

B. शहरी जनता के लिए भोजन — देश के औद्योगिकरण के साथ-साथ शहरीकरण शहरी जनसंख्या में वृद्धि हुई है इस बढ़ती हुई शहरी जनसंख्या के लिए कृषि से ही भोजन की आपूर्ति होती है।

C. निर्मित वस्तुओं का बाजार — भारतीय उद्योगों को कृषि से केवल कच्चे माल ही नहीं प्राप्त होती है वरन निर्मित वस्तुओं के लिए बाजार भी प्राप्त होता है भारत की अधिकांश जनता कृषि से संबंधित है और उसकी आय वृद्धि पर ही मुख्यतः औद्योगिक वस्तुओं की मांग निर्भर करती है। इस प्रकार कृषि की सम्पन्नता से कृषि में लगे लोगों की आय बढ़ती है तथा उद्योगों के लिए निर्मित वस्तुओं का अच्छा बाजार भी प्राप्त होता है।

D. पूंजी का साधन — कृषि भारतीय उद्योगों के लिए साधन भी है उद्योगों के लिए पूंजी भी है क्योंकि कृषि की उपज की खरीद-बिक्री करने वाले व्यापारी जो मुनाफा कमाते हैं उसे पूंजी के रूप में उद्योग में लगाते हैं।

E. मौद्रिक अर्थव्यवस्था का विकास — मौद्रिक अर्थव्यवस्था का विकास की शुरुआत वास्तव में कृषि उपजों की खरीद-फरोख्त से ही होती है। जिससे अधिकांश जनता इससे परिचित हो जाती है इसी मौद्रिक अर्थव्यवस्था के विकास के बाद में उद्योगों को लाभ होता है।

5. भारतीय निर्यात एवं विदेशी मुद्रा का साधन — भारतीय कृषि देश के निर्यात एवं विदेशी मुद्रा प्राप्त करने का भी साधन है। हमारे देश से प्रतिवर्ष कुछ कृषि उपजों का निर्यात किया जाता है जैसे जूट, चाय, तेलहन कपास, चावल, तम्बाकू मसाले आदि प्रमुख हैं इनके निर्यात से भारत को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

6. यातायात के साधनों का मुख्य आधार — यातायात के साधनों रेल, मोटरों बैलगाड़ियों आदि के माध्यमों तथा अन्य कृषि उत्पादित वस्तुओं को लाना व ले जाना एक मुख्य आधार है ये साधन अपनी आय का अधिकांश भाग कृषि उपज तथा कृषक जनता को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने से प्राप्त होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि इनके आज जो उन्नति की जाती है उसमें कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है।

7. राजस्व में योगदान — राजस्व में भी कृषि आय का अच्छा योगदान है कृषि से राज्य सरकारों को मालगुजारी (लगान) सिंचाई कर तथा कृषि आय कर आदि के रूप में आय प्राप्त होती है इसी प्रकार केन्द्र सरकार को अपनी आय का एक बड़ा भाग चाय, कॉफी, तम्बाकू आदि पर लगाए गए उत्पादन करों से कृषि उपज का निर्यात तथा निर्यात करों से प्राप्त होता है।

8. आर्थिक विकास का आधार — कृषि भारत के आर्थिक विकास का मूलाधार है।

Scanned by CamScanner

क्योंकि कृषि के विकास से ही देश के प्रमुख उद्योग-धन्धों की उन्नति हो सकती है और अंततः देश का औद्योगिक विकास हो सकेगा। कपड़ा, चीनी, जूट तथा रसायनिक उर्वरक कृषि यंत्र, कीटनाशक दवाओं आदि के उद्योग प्रत्यक्षतः कृषि से ही संभव है। अतः इन उद्योगों का विकास कृषि पर ही निर्भर है इसी उद्देश्य से भारत की पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि विकास को अधिक महत्व दिया जाता है।

9. भूमि का सर्वाधिक प्रयोग कृषि कार्य के लिए —— देश के कुल भूमि का कृषि कार्य के लिए सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है पर्वतीय भूमि, पहाड़ी भूमि, पथरीली भूमि, जंगली भूमि रेगिस्तानी भूमि आदि का क्षेत्रीय एवं जलवायु के अनुसार सर्वोत्तम प्रयोग कृषि कार्य के लिए किया जाता है जिससे देश की आय बढ़ती है।

10. पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था — भारतीय अर्थव्यवस्था में देश के कृषि उत्पादन में पशुपालन का 30% योगदान है विश्व के सबसे अधिक मवेशी भारत में है देश में लगभग 50 करोड़ पशुओं की संख्या है उनके भोजन, चारा, आदि की व्यवस्था कृषि से ही प्राप्त होता है। इन पशुओं से हमें दूध, घी, मांस, चमड़ा आदि अनेक तरह के उत्पाद प्राप्त होते हैं बैल, भैंसा, ऊँट घोड़ा कृषि एवं परिवहन के काम में आते हैं।

11. सरकारी आय का प्रमुख साधन —— कृषि सरकारी आय का प्रमुख साधन है कृषि की उन्नति होने से ही कृषि में लगे लोगों की करदान-क्षमता बढ़ती है, जिससे सरकार को अधिक से अधिक आय प्राप्त होती है। कृषि उत्पादों के यातायात से परिवहन सेवाओं को आमदनी की प्राप्ति होती है जो सरकारी आय है इसके साथ ही कृषि उत्पादों को निर्यात करने से कृषि से भूमि कर आदि से सरकार को आय की प्राप्ति होती है।

12. अन्तर्राष्ट्रीय महत्व — भारतीय कृषि को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। भारत विश्व उत्पादन में चाय, मूँगफली में प्रथम स्थान पर है जबकि चावल, कपास, गन्ना जूट में दूसरा स्थान है

उपर्युक्त विवरण से भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व के अतिरिक्त आधारभूत महत्व है क्योंकि देश के करोड़ों लोगों के लिए खाद्यान्न की पूर्ति करती है इस लिए कहा गया है कि "आर्थिक विकास की कुँजी कृषि विकास में निहित है।"

भारतीय कृषि की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

1. भारतीय कृषि की प्राकृतिक शक्तियों पर निर्भरता —— भारतीय कृषि एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह प्राकृतिक शक्तियों पर निर्भर है देश में सिंचाई के पर्याप्त साधनों की कमी के कारण कृषि मानसून पर निर्भर करती है यदि वर्षा समय पर तथा पर्याप्त मात्रा में हुई तो फसल अच्छी होती है अन्यथा नहीं इसलिए कहा भी जाता है कि "भारतीय

P.T.O

Scanned by CamScanner

(4)

भारतीय कृषि मानसून के साथ जुआ है। इसके अलावा, आँधी, ओला, पाला, कीड़े मकोड़े टिड्डी आदि से कृषि को काफी क्षति होती है इस प्रकार बहुत हद तक कृषि प्राकृतिक शक्तियों पर निर्भर है।

2. भूमि पर जनसंख्या का अत्यधिक निर्भरता — भारत में कुल जनसंख्या का करीब 70 प्रतिशत लोग कृषि पर आश्रित है इससे कृषि पर जनसंख्या का बोझ बढ़ गया है। साथ ही कृषि उत्पादन में जितनी वृद्धि होनी चाहिए उतनी नहीं हो रही है भूमि पर जनसंख्या के अधिक निर्भरता के कारण देश में प्रतिव्यक्ति कृषि योग्य भूमि में कमी हो रही है।

3. कृषि के क्षेत्र में बेरोजगारी तथा छिपी हुई बेरोजगारी — देश में बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण तथा भूमि पर जनसंख्या के अधिक निर्भरता के कारण भारतीय कृषि में बेरोजगारी तथा छिपी हुई बेरोजगारी पायी जाती है। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि भारत में कृषि में लगे हुए लोगों में से 17% व्यक्तियों को हटा दिया जाय तो कृषि उत्पादन में कमी नहीं होगी।

4. भारतीय कृषि की कम उत्पादकता — कृषि पर अत्यधिक निर्भरता, पुरानी पद्धति पर निर्भरता, पूँजी की कमी, निम्न स्तर की तकनीकि आदि के कारण अन्य देशों की तुलना में भारत में कृषि की उत्पादकता बहुत कम है फसलों के उत्पादन में अमेरिका जापान, चीन, फ्रांस से प्रति हेक्टेयर भारत में बहुत कम है।

5. कृषि का पिछड़ापन — भारतीय कृषि बहुत ही पिछड़ी हुई है यहाँ अभी भी देश के अधिकांश हिस्सों में पुरानी पद्धति, पुराने किस्म हल-बैल आदि का प्रयोग किया जाता है अभी देश में वैज्ञानिक तरीके के खेती का बहुत ही कम विस्तार हो सका है।

6. कृषि उत्पादन में खाद्यान्नों की प्राथमिकता — देश की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है प्रत्येक वर्ष 1.5 करोड़ जनसंख्या हमारे देश की जनसंख्या में बढ़ जाती है अतः बढ़ती हुई जनसंख्या को खिलाने के लिए भारतीय कृषि में खाद्यान्नों को प्राथमिकता दी जाती है।

7. व्यवसायिक फसलों का उत्पादन कम — भारत में खाद्यान्नों के उत्पादन के साथ-साथ कुछ व्यवसायिक फसलों जैसे कपास, गन्ना, तम्बाकू, तेलहन आदि का उत्पादन किया जाता है लेकिन खाद्यान्नों की तुलना में इनका उत्पादन कम होता है। इस प्रकार भारतीय कृषि का व्यवसायीकरण अभी भी नहीं हो पाया है।

8. कृषि जोतों का आकार छोटा — भारतीय कृषि की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ कृषि का आकार बहुत छोटा है। जनसंख्या में वृद्धि के कारण जमीन का बँटवारा होता चला जा रहा है जिससे जमीन छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटती चली जा रही है जिससे उत्पादन घटता जा रहा है।

उपर्युक्त विशेषताओं के साथ-साथ भारतीय कृषि की अनेक समस्याएँ है। जो निम्नलिखित है।

1. निम्न उत्पादकता की समस्या — भारतीय कृषि की एक महत्वपूर्ण समस्या निम्न उत्पादकता है आज भी अधिकांश किसान उत्पादन की पुरानी तकनीक अच्छे बीज एवं रसायनिक खादों के अभाव के कारण निम्न उत्पादकता की स्थिति बनी हुई है

Scanned by CamScanner

2. यंत्रीकरण की समस्या — भारतीय कृषक रूढ़ीवादी एवं परम्परावादी है अतः अधिकांश कृषक हल-बैल की सहायता से ही कृषि उत्पादन करते हैं जबकि जुताई और बुआई के लिए ट्रैक्टर, फसल काटने और साफ करने के लिए हार्वेस्टर व थ्रेसर, सिंचाई के लिए पम्पसेट उपलब्ध हैं। पिछले कुछ वर्षों से मशीनों का प्रयोग बढ़ा है सरकारी स्तर पर यह प्रयास किया जा रहा है कि कृषि आधुनिक कार्य में अधिक से अधिक मशीनों का प्रयोग किया जाय।

3. सिंचाई की समस्या — भारतीय कृषि की गम्भीर समस्या सिंचाई की समस्या है यहाँ की कुल कृषि योग्य भूमि की केवल 37% भूमि को ही सिंचाई सुविधाएँ प्राप्त हैं। इस प्रकार 63% भूमि मॉनसूनी वर्षा पर निर्भर है, जो अनिश्चित होती है वर्षा कभी अधिक होती है तो कभी कम।

4. वित्त की समस्या — भारतीय किसानों के पास सदा से ही पूँजी अर्थात वित्त की कमी बनी रहती है, जिससे वे अपने मन से भूमि में सुधार नहीं कर पाए हैं वे सदा ही साहूकारों, महाजनों तथा पैसे वालों के पराधीन रहते हैं। सरकार द्वारा कुछ प्रयास किया जा रहा है बैंकों ने अपनी शाखाओं का विस्तार ग्रामीण स्तर पर किया है। सहकारी बैंकों ने भी अपनी शाखाओं को गाँव में खोला है जिससे किसानों की समस्याओं का समाधान की दिशा में अच्छी पहल है।

5. बीज की समस्या — भारतीय किसानों को बोने के लिए अच्छा बीज नहीं मिलता है। जिससे उसका उत्पादन निम्न कोटी का होता है। अतः आवश्यकता इस बात का है कि किसानों को उन्नत बीज उपलब्ध कराया जाय जिससे उत्पादन में वृद्धि हो सके।

6. खाद की समस्या — पहले भारतीय कृषक गोबर खाद पर ही निर्भर रहते थे। लेकिन आज उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन हो गया है अब वे रसायनिक खादों को काम में लाने लगे हैं। खेतों को उचित मात्रा में खाद एवं उर्वरक मिलने से कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है और विद्वानों का मत है कि पर्याप्त मात्रा में खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करने से कृषि उत्पादन की मात्रा में तिगुनी वृद्धि हो सकती है।

7. पौध संरक्षण की समस्या — किसानों की एक समस्या फसल को कीटाणुओं व रोगों से बचाने की है जिसे पौध संरक्षण कहते हैं विद्वानों का कहना है कि भारत में कीड़े-मकोड़े व चूहों से फसल को 2100 करोड़ रुपये से लेकर 5000 करोड़ रुपये तक की हानि होती है। इस संबंध में केन्द्र सरकार दवाईयों और रसायनिक का समय-समय पर हवाई जहाजों एवं हेलीकॉप्टर से छिड़काव करती है लेकिन यह कार्य सीमित मात्रा में ही किया जाता है।

8. उपरोक्त समस्याओं से भारतीय कृषक एवं कृषि कार्य प्रभावित है इनके समाधान का प्रयास सरकारी स्तर पर किया जाना चाहिए। पर्याप्त समाधान से कृषि उत्पादन में वृद्धि संभव है ———

Scanned by CamScanner